houses. As I said, 61,000 people are waiting for housing accommodation in New Delhi and Old Delhi, but it is a question of financial provision.

SHRI FARIDUL HAQ ANSARI: May I know what is the procedure adopted for the allotment of these houses to the Government employees?

DR. B. GOPALA REDDI: Their seniority not merely in Delhi but all over India, whether they are serving in Bombay, Calcutta or Madras or anywhere else, their seniority in the particular category will be taken into account, and priority will be given.

SHRI BHUPESH GUPTA: In view of the fact that 61,000 Government employees are still without any residence or accommodation, may I know whether this matter was considered properly at the time of making allocations in the Third Five Year Plan for house construction for the Government employees in Delhi rather than general housing?

DR. B. GOPALA REDDI: The matter was fully considered by the Planning Commission.

घड़ियों तथा दीवार घड़ियों का निर्माण

*१२१. **श्री भगवत नारायण भार्गव :**
श्री नवाबसिंह चौहान :

क्या **वाणिज्य तथा उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत में किन किन स्थानों पर हाथ घड़ियां, जेब घड़ियां और अन्य प्रकार की घड़ियां तथा दीवार घडियां बनाई जा रही हैं ;

(ख) इन कारखानों में से (१) कौन कौन से सरकारी क्षेत्र में और (२) कौन कौन से ग़ैर-सरकारी क्षेत्र में है ;

(ग) १९६१ में प्रत्येक प्रकार की कितनी घड़ियां और कितनी दीवार घड़ियां बनाई गई और प्रत्येक कारखाने की अधिष्ठापित क्षमता कितनी कितनी है ; और

(घ) भारत में निर्मित विदेशी घड़ियों के मुकाबले में मूल्य तथा टिकाऊपन में कैसी हैं ?

†[MANUFACTURE OF WATCHES AND CLOCKS

*121. SHRI B. N. BHARGAVA‡:
SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN:

Will the Minister of COMMERCE AND INDUSTRY be pleased to state:

(a) the names of places in India where wrist-watches, pocket-watches and other kinds of watches and clocks are being manufactured;

(b) which of these factories are (i) in the public sector and (ii) in the private sector;

(c) the number of each type of watches and clocks manufactured in 1961 and their respective installed capacities in each of the factories; and

(d) how watches manufactured in India compare with foreign watches in cost and durability?]

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI MANUBHAI SHAH): (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House.

‡The question was actually asked on the floor of the House by Shri B. N. Bhargava.

†[ ] English translation.

STATEMENT

(a) to (c)

WATCHES

Name of place	No. of factories	Installed capacity	Production
Large scale sector—		Nos.	
Bombay	1	3,10,000	Assembly just commenced.
Bangalore	1 Public Sector	3,60,000	11,465 (Assembled upto 11-2-62).
Coonoor (S. India)	1	3,00,000	
Small scale sector—			
Ludhiana	3	58,500	None of these firms has as yet started production.
Chandigarh	1	19,500	
Delhi	1	12,000	
Bombay	1	12,000	
Himachal Pradesh	1	12,000	

CLOCKS INCLUDING TIME PIECES

Name of place	No. of factories		Installed capacity		Production	
	Clocks	Time-pieces	Clocks	Time-pieces	Clocks	Time-pieces
Large scale sector—					Nos.	
Bombay	3	2	60,000	2,70,000	19,355	Production of time-pieces has not yet started except in one factory; production so far is 500 Nos. only.
Calcutta	1	1	12,000	1,20,000	5,964	Nil.
Morvi	1	1	45,000	1,50,000	26,488	Nil.
Delhi	..	2	..	1,60,000	..	43,740
Poona	..	1	..	60,000	..	Nil.
Lucknow	..	1	..	12,000	..	Nil.
Ahmedabad	..	1	..	1,20,000	..	Nil.

Small scale sector—

The exact Number of small scale units munufacturing clocks and time-pieces is not known. They received assistance directly from the State Directors of Industries.

(d) The cost of Indian watches compare favourably with foreign watches. With regard to the durability of Indian watches, as the production has started only recently, it will be premature to say anything at present.

†[**उद्योग मंत्री** (श्री **मनुभाई शाह**) : (क) से (घ) सभा की मेज पर एक विवरण रखा जाता है ।

(क) से (ग)

विवरण

घड़ियां

स्थान	कारखानों की संख्या		स्थापित क्षमता		उत्पादन
बड़े पैमाने का क्षेत्र—					
बम्बई	१	सरकारी क्षेत्र	३,१०,०००	संख्या	पुर्जे जोड़ कर उत्पादन अभी शुरू हुआ है ।
बंगलौर	१		३,६०,०००	,,	पुर्जे जोड़ कर ११-२-६२ तक ११,४६५ ।
कुन्नूर (द० भारत)	१		३,००,०००	,,	..
छोटे पैमाने का क्षेत्र					
लुधियाना	३		५८,५००	,,	इनमें से किसी भी फर्म ने अभी उत्पादन शुरू नहीं किया है ।
चण्डीगढ	१		१९,५००	,,	
दिल्ली	१		१२,०००	,,	
बम्बई	१		१२,०००	,,	
हिमाचल प्रदेश	१		१२,०००	,,	

†[ ] Hindi translation.

दीवाल की घड़ियां (इनमें टाइम-पीस भी शामिल हैं)

स्थान	कारखानों की संख्या		स्थापित क्षमता		उत्पादन	
	दीवाल की घड़ियां	टाइम-पीस	दीवाल की घडियां	टाइम-पीस	दीवाल की घड़िया	टाइम-पीस
बड़े पैमाने का क्षेत्र					संख्या	
बम्बई . .	३	२	६०,०००	२,७०,०००	१९,३५५	एक को छोड़ कर अन्य कारखानों में उत्पादन अभी शुरू नही हुआ है । अब तक केवल ५०० घडियों का उत्पादन हुआ है ।
कलकत्ता . .	१	१	१२,०००	१,२०,०००	५,९६४	शून्य
मोखी .	१	१	४५,०००	१,५०,०००	२६,४८८	शून्य
दिल्ली . .	—	२	—	१,६०,०००	—	४३,७४०
पूना . .	—	१	—	६०,०००	—	—
लखनऊ . .	—	१	—	१२,०००	—	—
अहमदाबाद .	—	१	—	१,२०,०००	—	शून्य

छोटे पैमाने का क्षेत्र--

दीवाल की घड़ियां तथा टाइम-पीस बनाने वाले छोटे पैमाने के कारखानों की ठीक ठीक संख्या ज्ञात नहीं है। इन्हें राज्यों के उद्योग निदेशकों से सीधी सहायता मिलती है ।

(घ) भारतीय घडियो की लागत विदेशी घड़ियों की अपेक्षा अच्छी पड़ती है । जहां तक भारतीय घड़ियों के टिकाऊपन का संबंध है उसके बारे में अभी कुछ कहना कठिन है क्योंकि उनका उत्पादन हाल में ही शुरू हुआ है ।]

श्री भगवत नारायण भार्गव : स्टेटमेंट से यह जाहिर होता है कि कुल १५ कारखाने इस समय अपने देश में है, परन्तु उनमें से केवल दो ऐसे हैं जिनमे अभी उत्पादन शुरू हुआ है। मैं जानना चाहता हूं कि इन कारखानों को खुले हुए कितना समय हो चुका है और इनमे उत्पादन का काम अभी शुरू क्यो नहीं हुआ है ?

श्री मनुभाई शाह : पन्द्रह मे से दो तो है वाचेज के और तीन हैं क्लाक्स के। पांच मे तो काम शुरू हो गया है और दस जो हैं वे इस साल के अन्दर अन्दर चालू हो जायेंगे, ऐसी आशा है।

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या गवर्नमेंट का विचार है कि पब्लिक सेक्टर मे और फैक्टिरिया खोली जायें क्योंकि इस स्टेटमेंट से मालूम होता है कि केवल एक फैक्ट्री सरकारी क्षेत्र में है ?

श्री मनुभाई शाह : वह एक काफी है और उसकी कैपेसिटी भी बहुत है। एक अच्छी तरह से चल जायेगा तब दूसरे के बारे में विचार किया जायेगा।

श्री भगवत नारायण भार्गव : इन कारखानों में जो घड़ियां बनाई गई हैं उनके पुर्जे बाहर से मगाये जाते हैं या यहां पर भी बनते हैं ?

श्री मनुभाई शाह : अभी पहला साल है। इसलिये पुर्जे बाहर से आते हैं। इस सिलसिले में चार साल का प्रोग्राम है। चार साल मे ९० से ९५ प्रतिशत तक भाग हिन्दुस्तान में बनने लगेंगे।

श्री नवाबसिंह चौहान : आजकल कितने रुपय की और कितनी संख्या में घड़ियां बाहर से मंगाई जाती है और तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक उनका कितना अंश देश में ही निर्माण करने की गवर्नमेंट की योजना है ?

श्री मनुभाई शाह : जहां तक इम्पोर्ट का ताल्लुक है, चूंकि हमारे पास फारेन एक्सचेज नहीं है और इस चीज को बहुत एसेंशियल आइटम नहीं माना गया है, इसलिए सिर्फ २० या २५ लाख रुपये की घड़िया मंगाने की इजाजत है। लेकिन कंट्री की जितनी रिक्वायरमेंट है, उसको पूरा करने की हम कोशिश कर रहे है। मेरा यह खयाल है कि तृतीय पचवर्षीय योजना के अन्दर अन्दर हम इस सम्बन्ध मे न सिर्फ स्वावलम्बी बन जायेंगे बल्कि हम जिस तरह से क्लाक्स और टाइम पीसेज़ एक्सपोर्ट कर रहे हैं उसी तरह से हम ये घड़ियां भी एक्सपोर्ट कर सकेगे।

SHRI BHUPESH GUPTA: Recently the Government or rather the public sector has put on sale certain watches, men's watches and ladies' watches. May I know how much of it is indigenous, Indian, and how much of it is foreign?

SHRI MANUBHAI SHAH: As far as the value is concerned, the import content does not exceed Rs. 15 per watch, but as far as the manufacturing programme is concerned, as I said in my earlier answer, we have just begun assembling watches, and it will take four years before the watch becomes wholly indigenous.

SHRI BHUPESH GUPTA: May I know if it is not a fact that the present watches that are being sold, as far as the manufacturing aspect is concerned, are entirely foreign, and that they are only assembled here? If I am right, may I know what steps the Government are taking in order that the entire thing is manufactured in our country within less than four years?

SHRI MANUBHAI SHAH: Perhaps I am not audible to the hon. Member. I have explained to him that in the

first year it is purely assembly. The components will begin to be manufactured from the second year—54 per cent. in the first year, about 60 per cent. in the second year, 70 to 80 per cent. in the third year, and hope to reach 90 to 95 per cent. indigenous content in the fourth year.

SHRI JASWANT SINGH: The hon. Minister in his reply stated that because of shortage of foreign exchange watches to the extent of Rs. 20 lakhs to Rs. 25 lakhs are imported. May I know whether they have been imported on Government account or licence given to the established importers? What is the criterion?

SHRI MANUBHAI SHAH: The established importors' quota has been fixed at 2½ per cent. to 5 per cent. depending on the value of the watches.

श्री देवकीनन्दन नारायण : क्या मंत्री महोदय से मैं यह जान सकता हूं कि सरकारी फैक्ट्री की जो घड़ियां अपने यहां के पार्लियामेंट के बहुत से मेम्बरों को दी हैं उनमें से बहुत सी काम नहीं कर रही है ?

श्री मनुभाई शाह : सब काम कर रही हैं । मेरे पास कोई ऐसी शिकायत नहीं आई है । अभी दो चार मिनट पहले यह बहन जी कह रही थीं कि दो चार वाचेज भेज दीजिये । एक भी दिन ऐसा नहीं होता है जब मेरे पास २० या २५ दरख्वास्तें न आयें । मेरा यह काम नहीं है, लेकिन जब कुछ दोस्त मंगाते हैं तो भेजवा देता हूं ।

SHRI M. R. SHERVANI: May I know the value of export of time-pieces and clocks in the last year?

SHRI MANUBHAI SHAH: Small value is being exported. This year it might be even a few lakhs.

SHRI R. P. N. SINHA: Is the hon. Minister aware that the H.M.T. watches supplied to the Members of Parliament have been keeping correct time and proved to be very satisfactory?

SHRI MANUBHAI SHAH: So far as the reports go, no member has broadly complained. One or two gentlemen did tell me that sometimes after two months they found that it was going one minute either too fast or too slow. Some adjustment has to be made. But I can say without fear of contradiction that they have been very much appreciated throughout the country, not only by the two Houses but by the general public.

SHRI BHUPESH GUPTA: Members of Parliament are public sector, some of them. May I know why a number of these watches are sent to people like Mr. G. D. Birla and others? Have they run short of watches? When the country needs them and when watches are not available in the shops, why are they sent to them?

SHRI MANUBHAI SHAH: The information is entirely incorrect. We never send watches to anybody.

SHRI BHUPESH GUPTA: I have not surmised. I have myself seen the peon book in which Mr. G. D. Birla's name was one. He received the watch . . .

SHRI MANUBHAI SHAH: Perhaps, he placed an order.

MR CHAIRMAN: It might have been sold to him.

SHRI BHUPESH GUPTA: Yes, it is sold. But the average consumers who want to buy cheap watches are not in a position to buy them in the shops because the supply is inadequate. Why in that case is the Government going out of its way to secure such watches to the families of those like Birlas who have got plenty of watches and to spare?

MR. CHAIRMAN: Next question.

*122. [*The questioner (Shri Bairagi Dwibedy) was absent. For answer,* vide *col.* 1150 infra..]